بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 27
Issue - 01

राह-ए-ईमान

जनवरी
2025 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 25.10.2024).....8
7. दुनिया में तरक़्क़ी करने के गुर.....12
8. दावा मुसलेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा.....17
9. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सादा जीवन.....30
10. दारुल सनाअत क़ादियान में दाखला शुरू होने का ऐलान.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

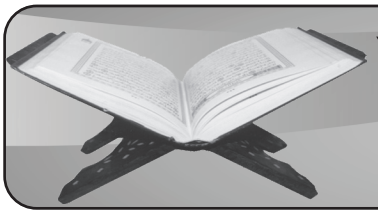

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:-5-(मुसलमान) तुझ से पूछते हैं कि उन के लिए क्या कुछ हलाल (वैध) ठहराया गया है। तू कह दे कि तुम्हारे लिए समस्त पवित्र पदार्थ हलाल (वैध) ठहराए गए हैं और शिकारी जानवर जिन्हें तुम शिकार करने की शिक्षा दे कर सिधा लो वास्तव में तुम उन्हें उस ज्ञान के द्वारा सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है तो वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए रोक रखे उसमें से खाओ तथा उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो। निस्सन्देह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है। 6-आज तुम्हारे लिए सारे पवित्र पदार्थ हलाल (वैध) ठहराए गए हैं और तुम्हारे लिए उन लोगों का (पकाया हुआ) भोजन वैध है जिन्हें किताब दी गई थी और तुम्हारा (पकाया हुआ) भोजन उन के लिए वैध है और पवित्राचरण मोमिन स्त्रियाँ और जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई थी उन में से पवित्राचरण स्त्रियाँ जब कि तुम उन से विवाह करके उन के महर दे दो तो वे तुम्हारे लिए वैध हैं, किन्तु न तो व्यभिचार करो और न चोरी छिपे मित्र बनाओ और जो व्यक्ति ईमान रखते हुए इन्कार से काम लेता है तो (समझो कि) उस के कर्म नष्ट हो गए और वह परलोक में हानि पाने वालों में से हो गया। (सूरह अल् माइदा- 4)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत इमाम मालक वर्णन करते हैं कि हज़रत आयशा से एक गरीब औरत ने मांगा। उस दिन आप रौज़ा से थीं और घर में एक रोटी को छोड़कर कुछ नहीं था। आपने सेवि का से कहा कि वह रोटी इस ग़रीब महिला को दे दे। सेविका कहने लगी कि आपके लिए कोई और चीज़ तो मौजूद नहीं है। आप ख़ुद किस चीज़ से रोज़ा खोलेंगी। हज़रत आयशा ने इस सेविका से कहा, वह रोटी इस गरीब महिला को दे दो। सेविका कहती है कि मैंने वह रोटी उस ग़रीब महिला को दे दी। जब शाम हुई तो किसी अज़ीज़ ने या किसी और व्यक्ति ने बकरी का कुछ गोश्त और उसका दस्ता भेंट भेज दिया। आप ने उस सेविका को बुलाकर कहा लो खाओ यह तुम्हारी रोटी से कहीं बेहतर है।

(मौता इमाम मालिक)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मुसलमानों की अवस्था

वह देखें कि सम्पूर्ण धरती पर मुसलमानों की क्या अवस्था है। क्या किसी पक्ष से भी कोई संतोषजनक हालत दिखाई देती है। वैभव की अवस्था तो साम्राज्य के रूप में दिखाई दे सकती है। मुसलमानों का सबसे बड़ा साम्राज्य इस समय रोम (तुर्की) का साम्राज्य है लेकिन इस की अवस्था को देख लो वह बत्तीस दाँतों में ज़बान हो रही है अर्थात असुरक्षित हैं और आए दिन किसी न किसी अड़चन तथा उलझन में ग्रस्त रहते हैं। ज्ञानरूपी अवस्था की दृष्टि से सब रो रहे हैं कि मुसलमान पीछे रह गए हैं और नित नई सभाएं तथा कमेटियां बनती हैं कि मुसलमानों की ज्ञानरूपी अवस्था का सुधार किया जाए। सांसरिक रूप से तथा धार्मिक पक्ष की दृष्टि से तो बहुत ही गिरी हुई अवस्था है। ऐसी कोई नई रस्म और कुकर्म नहीं है जिसमें मुसलमान ग्रस्त न पाए जाते हों। शुभकर्मों को छोड़ कुछ रस्में शेष रह गई हैं। करावासों को जाकर देखो तो अधिकतर अपराधी मुसलमान दिखाई देंगे किस-किस बात का वर्णन किया जाए मुसलमानों की अवस्था इस समय बहुत ही गिरी हुई है और इन पर आपदाओं पर आपदाएँ आ रही हैं। परन्तु क्या मुसलमान अभी चाहते हैं कि वे और पीसे जाएं। इस से बढ़कर उनकी अपमानित अवस्था क्या होगी कि वह पवित्र धर्म और जो अद्वितीय दौलत उनके पास थी और ईमान जैसी नेमत थी उसे वह खो बैठे हैं। और मुसलमानों के घरों में जन्म लेने वाले ईसाई हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान करते और इस्लाम पर व्यंग्य करते हैं और यदि खुले तौर पर ईसाई नहीं हुए तो ईसाईयों के दार्शनिक तथा चिकित्सकीय ज्ञान से प्रभावित हो कर धर्म को एक व्यर्थ तथा रद्दी चीज़ समझने लगे हैं।

ये आपदाएँ हैं जो इस्लाम पर आ रही हैं और मैं अत्यंत पीड़ा तथा खेद से सुनता हूँ कि इस ह ालपर पर भी कहा जाता है कि किसी सुधारक की आवश्यकता नहीं। यद्यपि युग स्वयं पुकार-पुकार कर कह रहा है कि इस समय ज़रूरत है कि कोई व्यक्ति आए और सुधार करे। मैं नहीं समझ सकता कि ख़ुदा तआला इस समय क्यों चुप रहता जबकि उस ने اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अलहिज्र :10) ख़ुद फ़रमाया है। इस्लाम पर ऐसा भयानक आघात पहुंचा है कि एक हज़ार वर्ष पूर्व तक इस का उदाहरण मौजूद नहीं है। यह शैतान का अंतिम आक्रमण है और वह इस समय समस्त शक्ति तथा ज़ोर के साथ इस्लाम को समाप्त करना चाहता है परन्तु अल्लाह तआला ने अपने वादे को पूरा किया है और मुझे भेजा है ताकि मैं सदैव के लिए उस का सिर कुचल दूं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

...अब देखो की इमाम मालिक रह. किस शान और श्रेणी का इमाम और खैरुलकुरून के युग का तथा करोड़ो लोग उनके अनुयायी हैं। जब उन्ही का यह मत हुआ तो जैसे यह कहना चाहिए कि करोड़ो प्रकाण्ड विद्वान (आलिम-फ़ाज़िल), मुत्तक़ी (संयमी) और वली जो हज़रत इमाम साहिब के सच्चे अनुयायी थे उनका यही मत था कि हज़रत ईसा की मृत्यु हो चुकी है क्योंकि संभव नहीं कि सच्चा अनुयायी अपने इमाम का विरोध करे विशेष तौर पर ऐसी बात में जो न केवल इमाम का कथन बल्कि ख़ुदा का कथन, रसूल का कथन, सहाबा रज़ि० का कथन, ताबिईन[1]* का, तबअ ताबिईन* का कथन है। अब थोड़ी शर्म करनी चाहिए कि जब ऐसा महान इमाम जो हदीस के समस्त इमामों से पहले प्रकट हुआ और समस्त नबवी हदीसों को जैसे एक दायरे की तरह घेरे हुए था, जब उसी का यह मत हो तो यह कितनी शर्म के विपरीत बात है कि ऐसी समस्या में इज्मा (सर्वसम्मती) का नाम लें। अफ़सोस कि मौलवी लोग जन सामान्य को धोखा तो देते हैं परन्तु बोलने के समय यह नहीं सोचते कि समस्त संसार अंधा नहीं। पुस्तकों के देखने वाले और बेईमानी को सिद्ध करने वाले भी तो इसी क़ौम में मौजूद हैं। ये नाम के मौलवी जब देखते हैं कि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों के प्रस्तुत करने से असमर्थ हो गए और भागने का कोई स्थान शेष नहीं रहा तथा कोई तर्क हाथ में नहीं तो विवश हो कर कह देते हैं कि इस पर इज्मा है। किसी ने सच कहा है।

ملا آن باشد کہ بند نشود اگرچہ دروغ گوید

ये लोग यह भी जानते हैं कि स्वयं इज्मा के अर्थों में ही मत भेद है। कुछ सहाबा तक ही सीमित रखते हैं, कुछ लोग तीन युगों तक, कुछ इमामों तक। परन्तु सहाबा और इमामों का हाल तो ज्ञात हो चुका तथा इज्मा को तोड़ने के लिए एक सदस्य का बाहर रहना भी पर्याप्त होता है कहां यह कि इमाम मालिक रज़ि. जैसा महान इमाम जिसके कथन के करोड़ों लोग अनुयायी होंगे। हज़रत ईसा की मृत्यु का स्पष्ट तौर पर मानने वाला हो और फिर ये लोग कहें कि उनके जीवित रहने पर इज्मा है। शर्म, शर्म, शर्म। और इज्मा के बारे में इमाम अहमद रज़ि. का कथन बड़ी छान-बीन और न्याय पर आधारित है। वह कहते हैं

---

*__ताबिईन__ – वह मुसलमान व्यक्ति जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी सहाबी को देखा हो। (अनुवादक)

*__तबअ ताबिईन__ – वे मुसलमान जिन्होंने ताबिईन को देखा। (अनुवादक)

कि जो व्यक्ति इज्मा का दावा करे वह झूठा है। इससे ज्ञात हुआ कि मुसलमानों के लिए सच्चा और पूर्ण दस्तावेज क़ुर्आन और हदीस ही है, शेष सब तुच्छ। परन्तु जो हदीस क़ुर्आन के स्पष्ट एवं शक्ति शाली तर्कों के विपरीत और उसके क़िस्सों के विरुद्ध कोई क़िस्सा वर्णन करेगी वास्तव में वह हदीस नहीं होगी कोई अक्षरों में परिवर्तन किया हुआ कथन होगा या सिरे से मन घड़त और बनावटी। ऐसी हदीस निस्सन्देह खण्डन करने योग्य होगी। किन्तु यह ख़ुदा तआला का फ़ज्ल और करम (कृपा) है कि मसीह की मृत्यु के मामले में किसी स्थान पर हदीस ने पवित्र क़ुर्आन का विरोध नहीं किया बल्कि पुष्टि की। क़ुर्आन में مُتَوَفِّيكَ (मुतवफ्फीका) आया है, हदीस में مُمِيتُكَ (मुमीतुका) आ गया है, क़ुर्आन में فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي (फ़लम्मा तवफ्फैतनी) आया, हदीस में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वही शब्द 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' बिना किसी परिवर्तन तथा बदलने के स्वयं पर चरितार्थ करके प्रकट कर दिया कि इसके अर्थ मारना है न कि और कुछ। तथा नबी की शान से दूर है कि ख़ुदा तआला के अभिप्रेत अर्थों का अक्षरांतरण करे। पवित्र क़ुर्आन की एक आयत, जिसके अर्थ ख़ुदा तआला के नज़दीक जीवित उठा लेना हो उसी को अपनी ओर सम्बद्ध करके उसके अर्थ मार देना कर दे यह तो बेईमानी और अक्षरांतरण है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर इस गन्दी कार्रवाई को सम्बद्ध करना मेरे नज़दीक प्रथम श्रेणी का पाप बल्कि कुफ्र के निकट-निकट है। अफ़सोस कि हज़रत ईसा को जीवित सिद्ध करने के लिए इन बेईमान पेशा मौलवियों की नौबत कहां तक पहुंची है कि नऊज़ुबिल्लाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी क़ुर्आन का अक्षरांतरण कर्ता ठहराया। इसके अतिरिक्त क्या कहें कि बेईमानों और झूठों पर ख़ुदा की लानत। यह बात बहुत सीधी और साफ थी कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आयत 'फ़लम्मा तवफ्फै-तनी' को इसी प्रकार स्वयं के बारे में सम्बद्ध कर लिया, जैसा कि वह आयत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर सम्बद्ध थी और सम्बद्ध करने के समय यह न कहा कि इस आयत को जब हज़रत ईसा की ओर सम्बद्ध करें तो इसके और अर्थ होंगे और जब मेरी ओर सम्बद्ध हो तो इसके और अर्थ हैं। हालांकि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नियत में को मायनों में परिवर्तन होता तो फ़ित्न: दूर करने के लिए यह सर्वथा कर्तव्य था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस उपमा और दृष्टांत (तम्सील) के अवसर पर कह देते कि मेरे इस बयान से कहीं यों न समझ लेना कि जिस प्रकार मैं क़यामत के दिन 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' कह कर यही कहेंगे कि मेरी मृत्यु के पश्चात बिगड़े। इसी प्रकार हज़रत मसीह भी 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' कह कर यही कहेंगे कि मेरी मृत्यु के पश्चात मेरी उम्मत के लोग बिगड़े। क्योंकि 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' से मैं तो अपना मृत्यु पाना अभिप्राय रखता हूँ परन्तु मसीह की ज़बान से जब 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' निकलेगा तो मृत्यु पाना अभिप्राय नहीं होगा बल्कि जीवित उठाया जाना अभिप्राय होगा। परन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह अन्तर करके नहीं दिखाया, जिससे अटल तौर पर सिद्ध है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों अवसरों पर एक ही मायने अभिप्राय लिए हैं।

(शेष.....) (पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 60-63)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय शोशल मीडिया का बच्चों पर पड़ रहा है गलत प्रभाव

प्रिय पाठको ! शोषल मीडिया आज कल जहां हमारे लिए ज़रूरी हो चुका है वहाँ इसमें सावधानी बरतनी भी उतनी ही ज़रूरी है। इसका अत्यधिक इस्तमाल हमारे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर डाल सकता है बल्कि यह कहना चाहिए कि डाल रहा है। मानो आज की युवा पीढ़ी को इसकी लत ही लग गई है। इसका समाज और विशेषकर उभरती पीढ़ी पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है?

सोशल मीडिया का संयम और बुद्धिमत्ता के साथ प्रयोग करने पर इसके कई सकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं और होते भी हैं, लेकिन इस बारे में जागरूकता लाना महत्वपूर्ण है कि इसका दुरुपयोग होने पर इसका बहुत ही नकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

वरिष्ठ ग्राफिक डिजाइनर कैटलिन रिची द्वारा बनाए गए बार ग्राफ में, सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के आंकड़े दर्शाए गए हैं। कॉमन सेंस मीडिया के अनुसार, किशोर हर दिन औसतन 5-7 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं। औसत वयस्क रोजाना सोशल प्लेटफॉर्म पर लगभग 2.5 घंटे बिताता है।

कई युवा यह सीखने से चूक रहे हैं कि अपने साथियों और वयस्कों के साथ सार्थक बातचीत कैसे शुरू करें और नए दोस्त कैसे बनाएं और दूसरों के अच्छे दोस्त कैसे बनें।

कॉमन सेंस मीडिया द्वारा 2018 में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 35% किशोरों का कहना है कि संचार का उनका पसंदीदा तरीका टेक्स्टिंग है, जबकि 16% का कहना है कि सोशल मीडिया और 10% का कहना है कि वीडियो चैटिंग। संचार के ये "पसंदीदा" तरीके बढ़ती पीढ़ी में बहुमत लेते हैं, और, जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, कई किशोर आमने-सामने बातचीत करने में कम सहज होते जाएंगे क्योंकि यहाँ वे स्क्रीन के पीछे छिप नहीं सकते।

सोशल मीडिया तुरंत ही तसल्ली देता है और शोध और संदेश भेजने में अत्यधिक गति प्रदान करता है। स्क्रीन के बीच तेज़ी से स्विच करना और हमेशा "अगली सबसे अच्छी चीज़" की तलाश करना, जब तत्काल परिणाम इतने सुलभ नहीं होते हैं, तो ध्यान अवधि को कम कर देता है।

आंकड़े बताते हैं कि औसत व्यक्ति वेब पेज लोड होने के लिए मात्र 16 सेकंड, स्टॉपलाइट के हरे होने के लिए 25 सेकंड, लाइन में 30 सेकंड प्रतीक्षा करने या पेन की तलाश में 18 सेकंड प्रतीक्षा करने के बाद निराश हो जाता है।

सोशल मीडिया न केवल समाज को अधिक अधीर बना रहा है, बल्कि यह किशोरों और वयस्कों की आमने-सामने बातचीत के दौरान आँख से संपर्क बनाने की क्षमता को भी कम कर रहा है। स्क्रीन पर लगातार नज़रें गड़ाए रहने से कई लोग इस महत्वपूर्ण कौशल को भूल गए हैं जो बातचीत में अर्थ जोड़ते हुए और आत्मविश्वास प्रदर्शित करते हुए संबंध बनाने की अनुमति देता है।

सोशल मीडिया हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहा है

सोशल मीडिया फ़ीड को उपयोगकर्ताओं को आकर्षित करने और उन्हें सोशल मीडिया द्वारा प्रदान की जाने वाली अंतहीन अस्थायी संतुष्टि "फ़ीड" करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इंस्टाग्राम के अनुसार, "जब आप इंस्टाग्राम खोलते हैं या अपना फ़ीड रिफ्रेश करते हैं, तो वे फ़ोटो और वीडियो जो आपको सबसे ज़्यादा पसंद हैं, वे आपके फ़ीड के शीर्ष पर दिखाई देंगे।"

लगातार नए मीडिया और मनोरंजन के साथ पेश किए जाने के कारण कई लोग देर रात तक डिवाइस पर लगे रहते हैं (जो कि तकनीक की लत के बढ़ने का संकेत है), साथ ही वे अपनी कीमती नींद भी खो देते हैं। 2018 में किए गए एक ब्रिटिश अध्ययन ने पुष्टि की कि सोशल मीडिया का उपयोग "नींद में कमी, से जुड़ा हुआ है, जो अवसाद, याददाश्त में कमी और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन से जुड़ा हुआ है।"

सोशल मीडिया और सामान्य रूप से तकनीक हमारे मस्तिष्क में एक रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है जिसमें डोपामाइन रिसेप्टर्स और ट्रांसमीटर शामिल होते हैं। डोपामाइन मस्तिष्क में एक रसायन है जो व्यवहार को प्रेरित करता है और एक तरह से हमें लाभकारी व्यवहार के लिए पुरस्कृत करता है। मस्तिष्क इस रसायन को तब रिलीज़ करता है जब सोशल मीडिया किसी को सफलतापूर्वक मान्यता और सहकर्मी की स्वीकृति दिलाता है। जिस तरह से मानव मस्तिष्क तकनीक से संबंधित गतिविधियों की लालसा करने के लिए तैयार हो गया है, वह उसी तरह से है जिस तरह से नशा करने वालों का मस्तिष्क प्रभावित होता है - इस वजह से, कई लोग मीडिया के इस रूप के अनियंत्रित रूप से आदी हो रहे हैं। सोशल मीडिया का उपयोग " डोपामाइन लूप्स " बनाता है।

सोशल मीडिया एक झूठी सच्चाई पेश कर सकता है - लोगों की सर्वश्रेष्ठता का दिखावा, और अनुभवों और वास्तविक स्थितियों का एक संकीर्ण लेंस। बहुत से लोग यह याद रखने में विफल रहते हैं कि हर किसी की सर्वश्रेष्ठता अलग होती है, और किसी के अनुभव, जीवन की परिस्थितियाँ या प्रयास दूसरे के समान नहीं दिखेंगे।

सोशल मीडिया पर पूर्णता की चाहत एक बढ़ती हुई समस्या को बढ़ावा देती है, क्योंकि यह एक अप्राप्य लक्ष्य है - पूर्णता प्राप्त करने का क्या मतलब है, इसकी कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। इस समस्या के कारण कई सोशल मीडिया उपयोगकर्ता मानसिक बीमारियों से पीड़ित हैं, और उन्हें चिंता, अवसाद, तुलना, अलगाव और खराब शारीरिक छवि से जूझना पड़ता है।

साइबर-धमकाना - जिसमें किसी अन्य व्यक्ति के बारे में किसी भी प्रकार की चोट पहुंचाने वाली, झूठी, नकारात्मक या अनुचित सामग्री भेजना या साझा करना शामिल है, जिससे उसे अपमानित या शर्मिंदगी महसूस हो, यह केवल इन मानसिक बीमारियों को बढ़ावा देता है।

इसके अतिरिक्त इसके सकारात्मक प्रयोग और लाभ तो असीमित हैं यह वर्तमान युग का एक महान आविष्कार है लेकिन इसका उपयोग सीमित और सावधानी पूर्वक होना चाहिए यह ध्यान रखना है।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 25.10.2024
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

बनू क़ुरैज़ा नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

बनू क़ुरैज़ा के समझौता तोडने पर अहज़ाब नामक युद्ध के बाद उनके क़िलों के घेराव किए जा रहे थे ताकि उन्हें मुसलमानों को हानि पहुंचाने तथा वादा तोडने पर दंडित किया जाए, इसका वर्णन चल रहा था। इसका और अधिक विवरण इस प्रकार है कि जब घेरा बन्दी का दबाव बढ़ गया तो बनू क़ुरैज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैसले पर क़िलों से नीचे उतर आए।

घेराव के बारे में पन्द्रह चौदह तथा पच्चीस दिन की विभिन्न रिवायतें हैं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इतिहास के भिन्न भिन्न स्रोतों से निकाल कर इस घेराव की अवधि लगभग बीस दिन बयान की है। इस फ़ैसले में हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. को निर्णायक बनाया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहूदियों को बन्दी बनाने के आदेश पर उनको रस्सियों से बांध दिया गया तथा महिलाओं एवं बच्चों को अलग कर दिया गया। उनके क़िलों से पन्द्रह सौ तलवारें, तीन सौ युद्ध कवच, दो हज़ार भाले, पन्द्रह सौ चमड़े की ढालें तथा बहुत से बर्तन मिले। ऊँट तथा अन्य पशु भी पाए गए जो सब के सब जमा कर लिए गए। औस नामक क़बीले के आदरणीय लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि बनू क़ुरैज़ा हमारे दोस्त हैं, आप स. उनको हमारे लिए क्षमा कर दीजिए। उनके अनुरोध पर आप स. ने फ़रमाया कि क्या तुम इस बात पर ख़ुश हो कि उनके बारे में फ़ैसला तुममें से ही

एक व्यक्ति के हवाले कर दिया जाए? उनके क़बूल करने पर यह मामला हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. के हवाले कर दिया गया। एक अन्य रिवायत के अनुसार आप स. ने फ़रमाया कि मेरे सहाबियों में से

जिसको चाहो अपना निर्णायक बना लो, तो उन्होंने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. को बना लिया। हज़रत सअद रज़ी. औस क़बीले के रईस थे तथा बनू क़ुरैज़ा के दोस्त थे इसलिए उनका विचार था कि मामला हमारे हाथ में है तथा अरब की प्रथानुसार हज़रत सअद रज़ी. अपने दोस्त क़बीले के लिए नर्मी करेंगे किन्तु हज़रत सअद रज़ी. का पवित्र एवं निष्ठावान हृदय ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ही सब रिशतों तथा सम्बंधों पर प्राथ्मिकता दिए हुए थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. इसके बारे में लिखते हैं कि औस नामक क़बीले के कुछ लोगों ने हज़रत सअद रज़ी. से अनुरोध किया कि क़ुरैज़ा क़बीले के लोग हमारे दोस्त हैं, जिस प्रकार ख़िज़रज ने अपने दोस्त क़बीले बनू क़ैनक़ाअ के साथ उदारता दिखाई थी, तुम भी बनू क़ुरैज़ा से उदारता पूर्वक व्यवहार करना तथा उन्हें कठोर दंड न देना।। सअद बिन मुआज़ रज़ी. पहले तो चुपचाप उनकी बातें सुनते रहे परन्तु उनके अधिक आग्रह पर कहा कि यह वह समय है कि सअद इस समय सत्य एवं न्याय के मामले में किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से विचलित नहीं हो सकता। यह जवाब सुनकर लोग ख़ामोश हो गए।

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. ने दोनों ओर से अपने निर्णय को स्वीकार करने के वादे एवं निश्चय के बाद अपना निर्णय सुनाया कि बनू क़ुरैज़ा के हत्यारे अर्थात यौद्धाओं का वध कर दिया जाए तथा उनकी महिलाएँ एवं बच्चे क़ैद कर लिए जाएँ तथा उनकी सम्पदा मुसलमानों में बाँट दी जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निर्णय सुना तो तुरन्त बोल उठे-

لَقَدْ حَكَمْتَ بِحُكْمِ اللهِ

अर्थात- तुम्हारा यह निर्णय ख़ुदाई विधान है।

इन शब्दों से आप स. का अभिप्राय: यह था कि बनू क़ुरैज़ा के विषय में इस निर्णय पर स्पष्ट रूप से ख़ुदा का हाथ काम करता हुआ दिखाई देता है तथा इस कारण से आप स. की दयावान भावना उसको रोक नहीं सकती। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ी. के फ़ैसले के बारे में फ़रमाया कि इसी निर्णय के बारे में मुझे फ़रिश्ते ने सहरी के समय बताया था। हज़रत सअद रज़ी. के फ़ैसले के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ९ जुलहिज्जा तथा एक रिवायत के अनुसार ७ जुलहिज्जा, जुमेरात के दिन मदीना वापस तशरीफ़ लाए। आप स. के आदेशानुसार बन्दियों को मदीना में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. के घर, महिलाओं तथा बच्चों को हज़रत रमला सुपुत्री हारिस के घर लाया गया और सहाबियों ने बनु क़ुरैज़ा के खाने के लिए ढेरों ढेर फल लाकर रख दिए और लिखा है कि यहूदी लोग रात भर फल खाने में व्यस्त रहे। हज़रत सअद रज़ी. के इस निर्णय पर कुछ आपत्ति करने वाले लोग, तथा कई बार हमारे युवाओं को भी यह कह कर उनमें विष भरते हैं कि बनू क़ुरैज़ा पर आप स. ने अत्याचार किया। इसका एक अति स्पष्ट उत्तर है कि यह फ़ैसला आप स. ने तो किया ही नहीं था, बल्कि अल्लाह तआला ने यह फ़ैसला उनके दोस्त से करवाया तथा उसमें भी आप स. से पक्का वादा लिया गया।

इस अवसर पर आप स. ने ये आकांक्षा भरे शब्द फ़रमाए कि- لَوْ اٰمَنَ بِیْ عَشَرٌ مِنَ الْیَھُوْدِ لَاٰمَنَتْ بِیَ الْیَھُوْدُ अर्थात- यदि यहूदियों में से दस प्रतिष्ठित लोग भी ईमान ले आते तो मैं ख़ुदा से आशा रखता था कि यह पूरी क़ौम मुझे स्वीकार कर लेती तथा ख़ुदा के प्रकोप से बच जाती।

दूसरे दिन सुबह को हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. का निर्णय जारी होना था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं भी निकट के ही एक स्थान पर बैठ गए ताकि यदि फ़ैसले के जारी होने के समय कोई बात ऐसी पैदा हो जिसमें आप स. के निर्देश की आवश्यकता हो तो आप स. तुरन्त मार्ग दर्शन कर सकें। यद्यपि हज़रत सअद रज़ी. के फ़ैसले की अपील न्यायिक रंग में आप स. के सामने पेश नहीं हो सकती थी परन्तु एक बादशाह अथवा लोकतांत्रिक अध्यक्ष एवं राष्ट्रपति के रूप में आप स. किसी व्यक्ति विशेष के सम्बंध में दया याचिका अवश्य सुन सकते थे।

आप स. ने दया की भावना के साथ यह आदेश भी पारित किया कि दोषियों को एक एक करके अलग अलग मारा जाए अर्थात एक की हत्या के समय दूसरे दोषी उसके पास न हों। जब ह्यी बिन अख़तब नामक सरदार बनू नज़ीर के क़बीले की ओर आया तो आप स. की ओर देख कर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), मुझे यह दु:ख नहीं है कि मैंने तुम्हारा विरोध क्यों किया, परन्तु बात यह है कि जो ख़ुदा को छोड़ता है, ख़ुदा भी उसे छोड़ देता है, यह उसी का आदेश एवं विधान है। इसी तरह कअब बिन असद रईसे क़ुरैज़ा को जब हत्या के स्थान पर लाया गया तो आप स. ने उसे संकेत दिया कि मुसलमान हो जाए। उसने कहा- ऐ अबू क़ासिम, मैं मुसलमान तो हो जाता, परन्तु लोग कहेंगे कि मौत से डर गया, अतएव मुझे यहूदी धर्म पर ही मरने दो।

इस युद्ध के द्वारा जमा होने वाले माले ग़नीमत (युद्ध विजय होने की अवस्था में हाथ आई धन,सम्पत्ति) को भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों में वितरित कर दिया तथा कुछ महिलाओं को भी इसमें से अंश दिया गया। बन्दियों के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने विभिन्न इतिहास की पुस्तकों में से बड़े अनुसंधान के बाद लिखा है कि कुछ रिवायतों से पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको नजद नामक स्थान की ओर भिजवा दिया था जहाँ कुछ नजदी क़बीलों ने उनके बदले कुछ धन राशि देकर उन्हें छुड़ा लिया था तथा इस धन राशि से मुसलमानों ने अपनी लड़ाई की आवश्यकताओं के लिए घोड़े तथा हथियार ख़रीदे थे। यदि ऐसा हुआ हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्यूँकि नजदी क़बीले तथा बनू क़ुरैज़ा आपस में दोस्त थे परन्तु सही रिवायतों से पता चलता है कि ये क़ैदी मदीना में ही रहे थे तथा आप स. ने उन्हें अरब की प्रथानुसार विभिन्न सहाबियों में बांट दिया था। उनमें से कुछ लोगों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए धन राशि देकर रिहाई प्राप्त कर ली थी तथा कुछ लोगों को आप स. ने यूँ ही उपकार की भावना से छोड़ दिया था। ये लोग बाद में धीरे धीरे स्वइच्छा से स्वयं मुसलमान हो गए।

इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ऐसा आदेश दिया जो आप स. की विराट दयापूर्ण

भावना तथा महिलाओं के उपकारक के रूप में स्वर्ण जल से लिखने योग्य है। आप स. ने फ़रमाया कि जो भी कोई महिला किसी को दी जाए अथवा बेची जाए यदि उसके साथ छोटा बच्चा अथवा बच्ची हो तो उसको उसकी माँ से अलग न किया जाए जब तक कि वह व्यस्क न हो जाए और ऐसा ही यदि दो छोटी बहिनें हों तो उन्हें भी व्यस्क होने तक जुदा न किया जाए। यह था रहमतुल्लिल आलमीन का अमल और आप स. का महिलाओं, क़ैदियों तथा अपने विरोधियों पर उपकार, और आजकल मुसमलानों का क्या हाल है कि अल्लाह और रसूल स. के नाम पर लोगों को घरों से बेघर कर रहे हैं, निकाल रहे हैं, हत्या कर रहे हैं और फिर परिणाम यही निकल रहा है कि मुसलमानों का अपना मान सम्मान समाप्त हो रहा है। अल्लाह तआला इन मुसलमानों को भी बुद्धि एवं समझ अता फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ
شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ عِبَادَ اللّٰهِ
رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ
لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब- १८००१०३२१३१

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI

Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

दुनिया में तरक़्क़ी करने के गुर

(भाषण- 12 सितम्बर 1931 ई.)

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

हज़रत मुसलेह मौऊद खलीफ़ा सानी रज़िअल्लाह अन्हो अपने एक भाषण में फरमाते हैं :-

"अभी एक मित्र ने क़ुर्आन करीम का एक रुकू तलावत किया है जिस की आन्तिम आयत यह है

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ (अल फ़ुर्क़ान आयत : 78)

अर्थात् अल्लाह तआला फ़रमाता है- ऐ रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तू उन लोगों को मेरी ओर से यह बात पुकार कर सुना दे कि तुम्हारे रब्ब को तुम्हारी चिंता करने की क्या आवश्यकता है यदि तुम्हारी ओर से दुआ का सिलसिला जारी न हो। इन्सान यदि अपने अस्तित्व पर ग़ौर करे तो आसानी से मालूम कर सकता है कि अल्लाह तआला को उस की कोई आवश्यकता नहीं। आम तौर पर कुछ लोग विचार करते हैं कि हमारा नमाज़ पढ़ना, सद्क़ा देना, ज़कात अदा करना, हज करना ख़ुदा तआला पर एहसान है। परंतु देखा गया है कि कुछ नादान जब किसी मुसीबत में गिरफ़्तार होते हैं तो कहते हैं मालूम नहीं ख़ुदा ने हमें क्यों मसीबत में डाला हम तो नमाज़ें पढ़ते और दूसरे धार्मिक आदेशों का पालन करते हैं। यद्यपि वह अपने दिल में यह अनुभव करते हैं कि ख़ुदा तआला ने उन से बुरा व्यवहार किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते थे। किसी व्यक्ति का बेटा मर गया और उस का एक मित्र शोक व्यक्त करने के लिए उस के पास गया तो वह चीख़ मार कर रो पड़ा और उस से कहने लगा ख़ुदा ने मुझ पर बड़ा अत्याचार किया है। यद्यपि इस के विचार में इस का कोई हक़ ख़ुदा तआला ने मार लिया था। किन्तु सोचना चाहिए वह कौन सा हक़ है जो बन्दे ने ख़ुदा तआला पर क़ायम किया है। मुझे हमेशा हैरानी होती है कि वह लोग जो अपनी नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज और तक़वा व पवित्रता पर गर्व किया करते हैं वह तो किसी कष्ट के अवसर पर चिल्ला उठते हैं कि ख़ुदा तआला ने हम पर अत्याचार किया लेकिन हिन्दुस्तान का वह शराबी शायर जो धर्म से बिल्कुल ख़ाली था एक सच्चाई की घड़ी में बावजूद शराब का आदी होने के ख़ुदा की वाणी उसे के दिल पर उतरती है और वह कह उठता है :-

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

ध्यान देना चाहिए जो चीज़ भी इन्सान के पास से जाती है वह आई कहाँ से है। ज़रा अपनी हैसियत को तो देखो कौन-सी चीज़ है जिसे अपनी कह सकते हो। इन्सान कहता है मेरी बीवी है किन्तु वह कहाँ से आई, बच्चे जिन्हें अपने कहा जाता है कहाँ से आए हैं। इसी प्रकार मकान, ज़मीन और सब दूसरी चीज़ें जिन्हें अपनी समझता है कहाँ से आती हैं? यदि उन चीज़ों की वास्तविकता पर ग़ौर किया जाए तो आसानी से मालूम हो जाएगा कि यह चीज़ें इन्सान की नहीं, बल्कि ख़ुदा तआला की ओर से मौहब्बत और उपहार हैं और उपहार देने वाले का हक़ है कि जब चाहे वापिस भी ले ले। बल्कि उपहार भी उसे कहते हैं जो कभी वापस न लिया

जाए। किन्तु दुनिया में इन्सान को जो कुछ मिलता है, वह अन्त में ले लिया जाता है। इस से मालूम हुआ दुनिया में इन्सान को वास्तविक उपहार भी नहीं मिलता बल्कि सभी चीज़ें कुछ समय के प्रयोग के लिए दी जाती हैं और इस प्रकार चीज़ देने वाले का हक़ होता है कि जब चाहे, वापस ले ले।

तो ख़ुदा तआला फ़रमाता है: مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ

अर्थात् तुम अपने अस्तित्व को समझते क्या हो? आख़िर इन्सान है क्या चीज़ कि ख़ुदा तआला उस की चिंता करे। दुनिया में जो चीज़ भी है उस का अन्त ख़ुदा तआला पर ही जाकर होता है। जैसा कि फ़रमाया

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰهَا (अन्नाज़ियात : 45)

अर्थात् कोई चीज़ और कोई आत्मा ऐसी नहीं जिस की कड़ी ख़ुदा तआला पर जाकर समाप्त न होती हो और जब हर चीज़ का चरम ख़ुदा परहै तोफिर यदि ख़ुदा तआला इन्सान को स्वयं ही बतौरएहसान न बुलाए तो इन्सान चीज़ क्या है कि उस की चिंता करे। لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ के दो अर्थ हैं अर्थात् यदि ख़ुदा तआला तुम को न पुकारे और यह कि यदि तुम उस को न पुकारो। यदि पहले अर्थ लिए जाएं तो इस रूप में इस आयत का यह अर्थ होगा कि यदि उसने अपनी ओर से यह निश्चित न कर लिया हो कि मैं तुम्हें पुकारूँगा अर्थात् बढ़ाऊंगा और उन्नति दूँगा, तो तुम कुछ नहीं कर सकते। उस ने स्वयं बतौर एहसान अपने पर यह अनिवार्य कर रखा है अन्यथा इन्सान का कोई हक़ नहीं। दूसरे अर्थ यह हैं कि अल्लाह तआला को तुम्हारी क्या चिंता है यदि तुम विनम्रता और ख़ाकसारी के साथ उस के आगे झुक कर यह न कहो कि हमारा कोई हक़ तो नहीं यदि तू एहसान कर दे तो तेरी ज़र्रानवाज़ी (बहुत बड़ा एहसान) है।

वास्तव में यही दो चीज़ें हैं जिन से इन्सान को संयम, उन्नति और कामयाबी प्राप्त हो सकती है। और दुनिया में सारी उन्नतियाँ इन्हीं दो तरीक़ों से प्राप्त हो सकती हैं। यह दुआ नहीं कि इंसान हाथ उठाए और कह दे या अल्लाह मुझे फलाँ उन्नति प्रदान कर या सारी उम्र हाथ में तस्बीह ले कर बैठा अल्लाह-अल्लाह करता रहे। बल्कि दुआ से आशय है कि अल्लाह तआला ने उस के लिए जो साधन पैदा किए हैं उन को प्रयोग करे। उदाहरणत: सन्तान प्राप्त करने के लिए उस ने यह माध्याम तय किया है कि इन्सान पसन्द के अनुसार विवाह करे। अब यदि कोई व्यक्ति विवाह तो न करे और दुआ करता रहे कि ख़ुदाया मुझे सन्तान प्रदान कर, दो यह दुआ स्वीकार नहीं हो सकती क्योंकि दुआ के अर्थ ही यह है कि पहले ख़ुदा तआला के तय किए हुए साधनों का पालन किया जाए और फिर ख़ुदा तआला से कामयाबी के लिए मदद माँगी जाए। देखो हुकूमत ने मनी आर्डर फॉर्म तय कर रखे हैं और जो व्यक्ति एक जगह से दूसरी जगह रुपया पहुँचाना चाहता है उस के लिए आवश्यक है कि उस फॉर्म को भर के दे। यह एक मदद है जो गवर्नमेंट अपनी प्रजा को एक जगह से दूसरी जगह रुपया भेजने के लिए देती है उस ने यह पद्धित सुनिश्चित कर रखी है। लेकिन जो व्यक्ति इस पद्धति को प्रयोग न करे बल्कि स्वयं ही कोई पद्धति आविष्कार कर ले उदाहरणत: शेअरों की किसी किताब में नोट रख कर डाकख़ाना में दे आए कि इसे फलाँ जगह पहुँचा दो तो वह गवर्न्मेंट की मदद से कोई लाभ नहीं उठा सकता क्योंकि हुकूमत से रुपया दूसरी जगह पहुँचाने में जो मदद प्राप्त की जा सकती है उसकी पद्धित यही है कि या तो मनी ऑर्डर कर दिया जाए और या बीमा, या उदाहरणत: अदालत में दीवानी दावा

के लिए एक विवरण कोर्ट फ़ीस का सुनिश्चित है। कल्पना करो एक मुक़दमा में 25 रुपया कोर्ट फ़ीस लगती है लेकिन कोई व्यक्ति यह तो न लगाए लेकिन पचास रुपया के नोट जला कर कहे मैंने तो दो गुना ख़र्च कर दिया मेरे मुक़दमे की सुनवाई होनी चाहिए तो यह प्रार्थना हरगिज़ स्वीकार न होगी क्योंकि उसने वह पद्धति नहीं अपनायी जो हुकूमत ने मुक़दमे की सुनवाई का सुनिश्चित कर रखा है। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने भी हर काम के लिए अलग-अलग साधन और पद्धतियाँ रखे हैं। दुआ के अलग ढंग हैं, सन्तान की शिक्षा-दीक्षा के अलग और व्यापार और नौकरी के लिए अलग-अलग। दुआ के लिए जो ढंग हैं उन में से एक तो यह है कि जब बन्दा ख़ुदा को पुकारता है तो वह सुनता है। अर्थात् जब कोई बंदा इन साधनों को जो ख़ुदा तआला ने विकास के लिए सुनिश्चित कर रखे हैं प्रयगो में लाता है तो वह उसे उन्नति देता है। इस की मिसाल यूरोप के लोगों में मिल सकती है। उन्होंने ज्ञान सीखे, खोजें कीं, मेहनत की, आविष्कार किए और ख़ुदा तआला ने उन को सांसारिक उन्नतियाँ प्रदान कर दीं क्योंकि उन के लिए उस ने यह एक माध्यम सुनिश्चित कर रखा है कि मेहनत करो और प्रयत्न से रहस्यों को पता करो। यूरोप वासियों ने इस माध्यम से उस से मदद माँगी और उस ने उन की दुआ को सुना। अर्थात् हुकूमत, दौलत, दबदबा, वैभव सब कुछ उन को प्रदान कर दिया क्योंकि उन्होंने उस माध्यम का पालन किया जो उन चीज़ों की प्राप्ति के लिए उस ने सुनिश्चित कर रखा है। लेकिन जो व्यक्ति इस माध्यम का पालन न करे वह चाहे किसी दूसरे ढंग से कितनी कठोर परेशानी क्यों न उठाए और मेहनत क्यों न करे, उसे कोई लाभ नहीं हो सकता। एक क़लन्दर जो दिन भर दर-बदर बन्दर को लिए फिरता है निश्चित रूप से एक व्यापारी से अधिक मेहनत करता है किन्तु उस के बराबर आमद पैदा नहीं कर सकता क्यों? इसलिए कि दौलत कमाने का जो माध्यम ख़ुदा तआला ने पैदा किया है उसे वह प्रयोग में नहीं लाता। तो दुनिया में विकास का एक माध्यम यह है कि बिन्दा ख़ुदा को पुकारे। अर्थात् इन साधनों को काम में लाए जो सांसारिक विकास के लिए ख़ुदा तआला ने सुनिश्चित कर रखे हैं।

फिर इस आयत के दूसरे अर्थ यह हैं कि यदि ख़ुदा तआला बन्दे को न पुकारता तो उस का क्या परिणाम होता। बन्दों के ख़ुदा को पुकारने की मिसाल तो यूरोप वासियों में दी जा चुकी है या हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की है जिन्होंने ख़ुदा तआला के सुनिश्चित किए हुए माध्यमों को प्रयोग करके उन्नति प्राप्त की। और ख़ुदा के बन्दों को पुकारने की मिसाल इस के नबियों की है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गुमनामी के कोने में पड़े थे और हिरा गुफा में इबादतें किया करते थे। आप ने वह सभी माध्यम जो सांसारिक विकास के हैं छोड़ रखे थे। किन्तु आप के पास ख़ुदा तआला का फ़रिश्ता आया और उस ने कहा उठ ख़ुदा तुझे बुलाता है। और फिर उस गुमनाम कोने से निकाल कर अल्लाह तआला ने आप को बादशाह बना दिया और ऐसी उन्नति प्रदान की कि धर्म और देश और सभ्यता और समाज सब पर आप का रंग छा गया। यहाँ तक कि आप के ग़ुलाम यूनिवर्सिटियों में शिक्षा प्राप्त किए बिना और लैबोरेट्रीज़ में अनुभव करने के बिना ही हर फ़न में दुनिया के उस्ताद बन गए और जिस मैदान में भी उन्होंने क़दम रखा, पूरी दिनया से आगे बढज गए। एक सहाबी का बयान है रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे एक अशर्फ़ी दी कि क़ुर्बानी के लिए बकरी ले आओ। मैंने सोचा मदीना में तो इस रक़म से एक ही बकरी मिलेगी किन्तु किसी गाँव से दो मिल जाएंगी इसलिए मैंने एक

गाँव से एक अशर्फ़ी में दो बकरियाँ ख़रीदीं। जब वापिस आया तो मदीना में किसी ने पूछा क्या बकरी बेचोगे मैंने कहा हाँ और एक बकरी एक अशर्फ़ी में उस को बेच दी। फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाकर बकरी भी और अशर्फ़ी भी पेश कर दी और आप के पूछने पर सब हाल कह सुनाया। आप ने उस की होशियारी को देख कर उस के लिए दुआ फ़रमाई। नतीजा यह हुआ कि बावजूद यह कि अरब ईरानियों और रोमियों जैसे व्यापारी न थे किन्तु वह सहाबी रज़ि. बयान करते हैं कि यदि मैंने मिट्टी भी ख़रीदी तो वह सोने के भाव बिक गई। लोग ज़बरदस्ती रुपया मेरे पास व्यापार के लिए छोड़ जाते थे और मैं लेने से इन्कार करता रहता था।

यह لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ (अगर तुम्हारी दुआएं न होतीं) के दूसरे अर्थ हैं। इस में अपने किसी हुनर या मेहनत का ज़िक्र न था। यह ख़ुदा तआला की अपनी आवाज़ थी। जिस के द्वारा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पढ़े और आप के साथ ही आप के दामन से जुड़े हुए लोग भी बढ़ते चले गए। जैसे यदि कोई व्यक्ति घोड़े पर सवार होता उस का कोट, पाजामा और दूसरे कपड़े भी सवार हो जाएँगे। उन लोगों ने यहाँ तक उन्नति की कि एक घटना लिखी है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. किसी क्षेत्र के गर्वनर नियुक्त हुए यह किसरा के ख़ज़ानों की विजय का ज़माना था। जिस में अबू हुरैरा रज़ि. को एक रूमाल मिला जो किसरा दरबार में आते हुए ज़ीनत के तौर पर हाथ में रखा करता था। अबू हुरैरा रज़ि. को जो छींक आई तो उस रूमाल से नाक साफ़ कर लिया और फिर फ़रमाया वाह अबू हुरैरा रज़ि. कभी तो वह दिन थे कि तू भूख के कारण बेहोश हो जाता था और लोग यह समझ कर कि मिर्गी का दौरा हो गया है तेरे सर में जूतियाँ मारा करते थे और आज यह दिन है कि किसरा के रूमाल में तू थूकता है। 4 हज़रत अबू हुरैरा बहुत बाद में ईमान लाए थे अर्थात् रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु से केवल तीन साल पहले। इस कमी को पूरा करने के लिए आप मस्जिद से बाहर नहीं निकलते थे। जिससे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हर एक बात सुन सकें। इस कारण उन को कई बाप सात-सात फ़क़े आजाते। लोग समझते उन्होंने खाना खा लिया होगा। और उन से न पूछते। वह भूख की अधिकता से बेहोश हो जाते और लोग मिर्गी का दौरा समझ कर जूतियाँ मारते क्योंकि अरब वासियों में यह रिवाज था। तो कभी यह हाल था और फिर इतनी अधिक उन्नति मिली कि किसरा जैसे ज़बरदस्त शासक की ज़ीनत और अलंकरण का रूमाल आप के नाक साफ़ करने के काम आता था। यह لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ की दूसरी मिसाल है। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आगे पढ़े तो आप से सम्बन्धित लोग भी उन्नति कर गए। जैसे वायसराय के दरबार में बड़े-बड़े रईस और प्रतिष्ठित लोग भी कई बार नहीं जा सकते लेकिन उसका बैरा जा सकता है इसी प्रकार ख़ुदा तआला के अम्बिया के साथ सम्बन्ध पैदा करने वाले भी उन्नति कर जाते हैं। यही कारण है अल्लाह तआला ने كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (सूरह अत्तौब:119) पर ज़ोर दिया है। क्योंकि जब सादिक़ीन (अम्बिया) के लिए फाटक खुलता है तो साथ ही उन के साथ रहने वाले दाख़िल हो जाते हैं। इसलिए दुनिया में विकास के लिए आवश्यक है कि या तो इन्सान पूरी मेहनत और कोशिश करे और या फिर ख़ुदा तआला से ऐसी लौ लगो कि वह उस के लिए साधन स्वयं ही पैदा कर दे।

(अलफ़ज़ल 27 सितम्बर 1931 ई.)

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY:20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

दावा मुसलेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा

(हज़रत खलीफ़ा सानी रज़िअल्लाहु अन्हु की क़लम से) **(किस्त - 2)**

(20 फ़रवरी 1944 ई. स्थान होशियारपुर)

... जब सभी पक्ष-विपक्ष इस लेख पर बहस कर के थक गए तो इसी वर्ष के प्रारंभ में 5-6 जनवरी की मध्य रात्रि को मैंने एक रोया (स्वप्न) देखा। रोया की हालत में देखा कि मैं एक ऐसी जगह पर हूं जहाँ शत्रु की फ़ोज के साथ युद्ध हो रहा है। वहां खड़े हो कर मैं कुछ लोगों से बातें कर रहा हूं कि अचानक मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे जर्मन फ़ौज ने उस जगह पर जहां पर मैं हूं हमला कर दिया है और इतना भंयकर हमला किया है कि मैं जिस फ़ौज के पास था उसने पराजित होना शुरू कर दिया। मैं स्वप्न में यह देख कर सोचता हूं कि अब यहां रुकना उचित नहीं मुझे भाग कर कहीं ओर चले जाना चाहिए। इसलिए मैं उस स्थान से बाहर निकल गया मगर जैसे ही बाहर आया तुरंत मेरे मन में यह विचार आया कि किसी पूर्व पेशगोई के अन्तर्गत मैं इस स्थान से भागने के लिए निकला हूं और अब भविष्य में मेरी यात्रा इसी पेशगोई के अनुसार होगी। इसलिए मैंने दौड़ना शुरू कर दिया। रोया में महसूस करता हूं कि मैं इतना तेज़ दौड़ रहा हूं कि पृथ्वी मेरे पौरों के नीचे सिमटती जा रही है और मैं एक-एक कर के मीलों की दूरी तय कर रहा हूं। मेरी उस तेज़ी (गति) का अनुमान इस से लगाया जा सकता है कि जितनी देर में कोई व्यक्ति गज़ भर चलता है मैं सपने में उतनी देरी में पचास-साठ मील बढ़ जाता हूं। जर्मन सिपाही बहुत पछे रह गए हैं और मानो मेरे साथियों को भी क़ुदरत की ओर से दौड़ने की इतनी शक्ति दी गई थी परन्तु फिर भी वह मुझ से बहुत पीछे रह गए यहाँ तक कि मैं दौड़ते-दौड़ते एक पहाड़ी की तलहटी में पहुंच गया। वहाँ कई रास्ते मुझे दिखाई दिए कोई किसी दिशा में जाता था और कोई किसी दिशा में। मैं इन रास्तों के विपरीत दौड़ता रहा ताकि मैं यह ज्ञात कर सकूं कि पेशगोई के अनुसार मैंने कौन से मार्ग का चुनाव करना है। इस पर मेरा एक साथी आवाज़ दे कर कहता है कि इस सड़क पर नहीं दूसरी सड़क पर जाओ। मैं जब उसके कहने पर उस सड़क की दिशा में जो बहुत दाएं ओर थी वापस लौटता हूं तो ख़ुदा तआला की क़ुदरत के शक्तिशाली हाथ ने पकड़ कर मुझे बीच के रास्ते पर चला दिया। मेरा साथी मुझे आवाज़े देता जा रहा था कि इस ओर आएं उस दिशा मैं न जाएं मगर मैं स्वयं को असहाय पाता हूं और उसी रास्ते पर दौड़ता रहता हूं और यह महसूस करता हूं कि इस रास्ते का चुनाव करना अल्लाह तआला की इच्छा है। अत: मैं उस रास्ते पर चलता रहता हूं। इसी दौरान मुझे ख़्याल आया कि इस घटना के विषय में जो पेशगोई की गई थी उसमें यह भी वर्णन था कि इसके बाद एक झील आएगी वह झील कहां है? जब मुझे यह विचार आया तो मैंने अचानक मैं क्या देखता हूं कि मेरे सामने एक झील है और मुझे लगता है कि इस झील को पार करना मेरे लिए आवश्यक है। तभी मैंने देखा कि झली पर कुछ नाव जैसी वस्तुएं तैर रही थीं, जिन पर कुछ लोग सवार थे। स्वप्न में मैं यह समझता हूं कि यह क़ौम मूर्तिपूजक है और यह लोग जिन पर सवार हैं उनके बुत हैं और उस समय यह लोग अपने वार्षिक उत्सव पर बुतों को स्नान कराने के उद्देश्य से निर्धारित घाट की ओर ले जा रहे हैं। जब मुझे उस झील को पार करने का कोई दूसरा रास्ता नज़र नहीं आया तो तुरंत मैं कूद कर एक बुत पर सवार हो गया, तभी इर्द-गिर्द के लोग

ऐसे शब्द कहने लगे जिससे उनके बुतों की महानता स्पष्ट होती थी। मैंने उस समय अपने दिल में कहा कि मेरा इस समय चुप रहना ग़ैरत (सम्मान) के विरुद्ध है। इसलिए मैंने उन लोगों को तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की दावत (शिक्षा) दी और बड़े ज़ोर से मैंने शिर्क की बुराईयाँ बताईं। उस समय सपने में मैं यह महसूर करता हूं कि मेरी ज़बान (भाषा) उर्दू नहीं बल्कि अरबी है और अरबी में ही मैं उन्हें तौहीद की शिक्षा दे रहा हूं। इतने में मैं क्या देखता हूं कि कुछ पुजारकों के दिल मेरे इस भाषण द्वारा प्रभावित होकर एकेश्वरवाद में विश्वास करने लग गए और वह एक के बाद एक कर के मुझ पर ईमान लाते चले गए मगर मैंने अपना उपदेश जारी रखा यहां तक कि मैंने उन से कहा जब इस झील का किनारा आएगा तो तुम्हारे यह बुत इस पानी में विसर्जित किए जाएंगे और संसार में केवल एक ईश्वर का शासन स्थापित किया जाएगा। अत: इसी प्रकार में तब्लीग़ करता रहा। जब हम झील के दूसरी ओर पहुंचे तो मैंने उन्हें उन मूर्तियों को पानी में विसर्जित करने का आदेश दिया और उन सभी ने मेरे इस आदेश का पालन किया और इन बुतों को झील में विसर्जित कर दिया। इसके बाद मैं फिर खड़ा हुआ और उन्हें उपदेश देने लगा। उस समय मुझे महसूस हुआ कि वह लोग एक ख़ुदा पर विश्वास रखते हैं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वीकार करते हैं किन्तु क़ौम का कुछ हिस्सा अभी भी ईमान नहीं लाया। उस समय मैं उन्हीं में से एक व्यक्ति जिसका इस्लामी नाम मैंने अब्दुल शकूर रखा है को संबोधित कर कि कहता हूं ऐ अब्दुल शकूर! मैं तुम्हें इस क़ौम में अपना नायब नियुक्त करता हूं तुम्हारा यह कर्तव्य होगा कि तुम अपनी क़ौम में तौहीद (एकेश्वरवाद) स्थापित करो और शिर्क (बहुदेववाद) को मिटा दो और तुम्हारा कर्तव्य होगा कि इन लोगों को बताओ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं। और तुम्हारा यह भी कर्तव्य होगा कि तुम इस क़ौम का ध्यान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे की ओर दिलाओ। जब मैं वापस लौटूंगा तो तुमसे हिसाब लूंगा और देखूंगा कि तुमने इन कर्तव्यों को कहां तक पूरा किया है। रोया की अवस्था में जब मैं उस से कहता हूं कि तेरा यह कर्तव्य होगा कि तू इन लोगों को सिखाए कि अल्लाह एक है और तू उन लोगों से यह गवाही ले कि اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه तो उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मेरी जीभ से अल्लाह तआला स्वयं बोल रहा है और जब मैंने कहा कि लोगों से तुम्हे यह गवाही भी लेनी होगी कि اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ तुरंत मुझे ज्ञात हुआ कि मानो अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आत्मा को अनुमति दी है कि वह मेरी जीभ पर नियंत्रण करें और स्वयं मेरी जीभ द्वारा कलाम (बात) फ़रमाएं। इसलिए जब मैं कहता हूं तुम्हे यह स्वीकार करना होगा कि اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ तो रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी जीभ द्वारा बोले और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- اَنَا مُحَمَّدٌ عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ हे लोगो सुनो! मैं मुहम्मद हूं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल। फिर मुझे ऐसा महसूस होता है कि मेरी जीभ पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़ुदरत दी गई और जब मैंने उसे कहा कि तुम्हें अपनी क़ौम से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने का इक़रार भी लेना पड़ेगा तो उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आपने मेरी जीभ से फ़रमाया اَنَا الْمَسِيْحُ الْمَوْعُوْدُ ऐ लोगो मैं तुम्हे बताता हूं कि मैं वही मसीह हूं जिसका वादा (वचन) तुम्हें

दिया गया था। इसके बाद मुझे यह महसूस हुआ कि मुझे आदेश हुआ है कि मैं अपना दावा लोगों के सामने पेश करूं और मैं उन से कहूं कि मैं मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ख़लीफ़ा हूं मगर उस समय बजाय यह शब्द जारी होने कि मेरी जीभ पर यह शब्द जारी हुए कि اَنَا الْمَسِيْحُ الْمَوْعُوْدُ مَثِيْلُهٗ وَخَلِيْفَتُهٗ मैं भी मसीह मौऊद ही हूं उसी के समान, उसी का उदाहरण (आदर्श), और ख़लीफ़ा। जब सपने में मैंने अपने बारे में यह शब्द कहे तो अचानक मैं घबरा गया कि मैंने यह क्या कहा है इस पर तुरंत मुझे एहसास हुआ कि यह वही पेशगोई है जो मुसलेह मौऊद के बारे में की गई थी जिस में बताया गया था कि मुसलेह मौऊद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उदाहरण (संकेत) और आदर्श होगा। तब मैंने समझा कि ख़दा ने यह पेशगोई मेरे लिए ही रखी हुई थी।

रोया की हालत में मैंने और भी कई बातें वर्णन की हैं उदाहरणतया मैंने उनसे कहा मैं वही हूं जिस के प्रकटन के लिए कुंवारी लड़कियाँ उन्नीस सौ साल से इंतज़ार कर रही थीं। वास्तव में यह इंजील की एक भविष्यवाणी है जिसमें हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं जब मैं पुन: संसार में लौटूंगा तो कुछ क़ौमें मुझ पर ईमान लाएंगी और कुछ इन्कार करेंगी उस समय उन क़ौमों का उदाहरण ऐसा होगा जैसे दस कुंवारियां जिन में कुछ होशियार (चतुर) थीं और कुछ सुस्त (आलसी), दूल्हे की प्रतीक्षा में बैठ गईं जो आलसी (लापरवाह) थीं उनका प्रतीक्षा करते हुए ही तेल समाप्त हो गया और जब दोबारा तेल लेने बाज़ार गईं तो पीछे से दूल्हा आ गया और वह उनके साथ शामिल होने से वंचित रह गईं लेकिन जो चतुर थीं और जिन्होंने अपने साथ तेल रखा था वह दूल्हे को अपने साथ ले कर उसके क़िले में चली गईं। इस उदाहरण में हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सालम ने इस तथ्य की ओर संकेत दिया है कि जब मैं दुनिया में वापस लौटूंगा तो जो क़ौमें बुद्धिमान होंगे वह मुझ पर विश्वास कर लेंगी लेकिन कुछ अपनी लापरवाही के कारण मुझे स्वीकार करने से वंचित रह जाएंगी। अत: इस भविष्यवाणी की ओर संकेत करते हुए रोया की अवस्था में मैं उन से कहता हूं कि मैं वही हूं जिसके प्रकटन के लिए उन्नीस सौ साल से कुंवारिया प्रतीक्षा कर रही थीं। और जब मैं यह कहता हूं कि मैं वह हूं जिसके लिए कुँवारियां उन्नीस सौ वर्ष से प्रतीक्षा कर रही थीं तो कुछ नौजवान युवतियां जो सात या नौ हैं जो समुंद्र के तट पर बैठी हुई मेरी ओर देख रही थीं इन शब्दों को सुनते ही दौड़ते हुए मेरी ओर आ गईं और उन्होंने मेरे इर्द-गिर्द घेरा बना लिया और कहा हाँ तुम सच कहते हो हम उन्नीस सौ वर्ष से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थीं। इसके बाद फिर मैं उनको हिदायत दे कर किसी ओर जाने की योजना बनाता हूं क्योंकि सपने में मुझे महसूस होता है कि मेरी यात्रा समाप्त नहीं हुई बल्कि मैं और आगे जाऊंगा। इसलिए सपने की अवस्था में ही उस व्यक्ति जिसका नाम अब्दुल शकूर रखा है को कहता हूं मैं जब इस यात्रा से वापस लौटूंगा तो देखूंगा कि तुम्हारी क़ौम तौहीद पर स्थापित हो चुकी है, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे पर ईमान ला चुकी है?

इस रोया ने जिसमें कश्फ़ और इल्हाम का भी हिस्सा है मुझे यह स्पष्ट कर दिया कि वह भविष्यवाणी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस स्थान से प्रकाशित की थी वह मेरे द्वारा पूरी हो चुकी है अत: वह बात जिसके विषय में मैं तीस साल तक चुप रहा उसकी घोषणा मैंने दुनिया में करनी शुरू कर दी।

इस समय यहां अहमदी भी मौजूद हैं, ग़ैर-अहमदी भी मौजूद हैं, हिंदू भी मौजूद हैं, सिक्ख भी मौजूद हैं, मैं उन सभी से कहता हूं कि देखो ! ख़ुदा से बड़ा कोई नहीं, ख़ुदा के प्रकोप से बढ़ कर किसी का प्रकोप नहीं और ख़ुदा के दण्ड से बढ़ कर किसी की दण्ड नहीं। दुनिया के साम्राज्य और हुकूमतें सभी उसके सामने निरर्थक और तुच्छ हैं और उसकी झूठी शपथ मनुष्य को कष्ट (विनाश) में ग्रस्त कर देता है मैं आज उसी एक और प्रतापी ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं जिस के क़ब्ज़ा में मेरे प्राण हैं कि जो रोया मैंने बताई है वह उसी प्रकार मुझे आई है اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰہُ बताने में कोई थोड़ा सा अंतर हो गया हो तो अलग बात है। मैं ख़ुदा को गवाह बना कर कहता हूं कि मैंने कश्फ़ी हालत में कहा اَنَاالْمَسِیحُ الْمَوْعُوْدُ مَثِیْلُہٗ وَ خَلِیْفَتُہٗ और मैंने इसी कश्फ़ मैं ख़ुदा की आज्ञा से यह कहा कि मैं वही हूं जिसके प्रकट होने के लिए कुंवारियाँ उन्नीस सौ वर्षों से प्रतीक्षा कर रही थीं। अत: **मैं ख़ुदा की आज्ञा के अधीन शपथ खा कर यह घोषणा करता हूं कि ख़ुदा ने मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई के अनुसार आपका वही मौऊद पुत्र घोषित किया है जिसने पृथ्वी के किनारों तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम को पहुंचाना है। मैं यह नहीं कहता कि मैं ही मौऊद हूं तथा कोई दूसरा मौऊद क़यामत तक नहीं आएगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई से ज्ञात होता है कि कई दूसरे मौऊद भी आएंगे और कुछ ऐसे मौऊद भी होंगे जिनका जन्म शताब्दियों के बाद होगा। बल्कि ख़ुदा ने मुझे बताया है कि वह एक ज़माने (युग) में स्वयं मुझे पुन: (वापस) दुनिया में भेजेगा और मैं फिर किसी शिर्क के समय में दुनिया का सुधार करने के लिए आऊँगा जिसका अर्थ यह है कि एक समय में मेरी आत्मा किसी दूसरे व्यक्ति में जिसके पास मेरे जैसी शक्तियां होंगी स्थान्तरित हो जाएंगी और वह मेरे मार्ग पर चल कर संसार का सुधार करेगा।** अत: आने वाले आएंगे और अल्लाह तआला के वादों के अनुसार अपने-अपने समय में आएँगे। मैं जो कुछ कहता हूं वह यह है कि वह पेशगोई जो इस शहर होशियारपुर में सामने वाले मकान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर प्रकट हुई जिसकी घोषणा आपने इसी शहर से फ़रमाई और जिसके बारे में फ़रमाया कि वह 9 वर्ष की अवधि में पैदा होगा वह पेशगोई मेरे द्वारा पूरी हो चुकी है और अब कोई नहीं जो इस पेशगोई का प्रतिरूप हो सके।

यह पेशगोई किसी बाद के युग के लिए नहीं थी अपितु जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखित फ़रमाया इस समय के लोगों के ईमान की दृढ़ता के लिए यह पेशगोई की गई थी। अत: आवश्यक था कि यह पेशगोई इसी समय में पूरी होती और उन लोगों के सामने पूरी होती जिनके सामने यह प्रकाशित की गई थी। हमारे बीच अभी भी ऐसे सैंकड़ों लोग जीवित मौजूद हैं जिन्होंने अपने सामने इस विज्ञापन को प्रकाशित होते देखा और पढ़ा। उन्होंने वह सभी विरोध देखे जो पेशगोई की महानता को प्रकट करने के लिए हुईं और फिर उन्होंने इस पेशगोई के कई संकेत को पूरे होते हुए देखा। अत: आज हम इस स्थान में एकत्रित हुए हैं ताकि अल्लाह तआला की स्तुति करें जिसने एक गुमनाम व्यक्ति को, जो घर में भी जाना नहीं जाता था दुनिया के कोने-कोने तक मशहूर कर दिया।

आप ऐसी गुमनामी की हालत में दुआ करते थे कि कई बार जब दूर के रिश्तेदार आते तो वह आपको

सज्दा में बैठा देख कर यह सोचते कि कोई मुल्ला बैठा है, कई बार आप पर ऐसी स्थिति भी होती कि स्वयं भूखा रह कर अपना खाना किसी मेहमान को खिलाना पड़ता। क्योंकि हमारी जद्दी संपत्ति पर ताया साहिब का क़ब्ज़ा था इसिलए कई बार हमारी ताई साहिबा गुस्से में उन्हें भोजन भी नहीं देतीं क्योंकि वह कोई काम नहीं करते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार स्वयं सुनाया कि अक्सर ऐसा होता कि मेरे पास जब कोई अतिथि आता और मैं भोजन के लिए उनको कहता तो वह कह देतीं कि हमारे पास मेहमान के लिए कोई भोजन नहीं। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चुप कर कि अपना भोजन मेहमान को खिला देते और स्वयं भूखे रहते। एक व्यक्ति ने बताया कि मैं एक लम्बे समय तक आपका अतिथि रहा आप का यह तरीक़ा था कि आपके लिए जो भोजन आता वह मुझे खिला देते और स्वयं भुने चनों पर गुज़ारा करते। आप अपने अशआर (पंक्तियों) में भी फ़रमाते हैं :

لُقَاظَاتُ الْمَوَائِدِ كَانَ اُكْلِيْ
وَصِرْتُ الْيَوْمَ مِطْعَامَ الْاَهَالِيْ

(आईना कमालाते इस्लाम जिल्द 5 पृष्ठ 596)

ऐ लोगो! तुम जानते हो कि मुझ पर एक समय ऐसा बीता है जब दस्तरख़्वान के टुकड़े और बची हुई रोटी मुझे खाने के लिए दी जाती थीं लेकिन आज वह दिन है कि सैंकड़ों ख़ानदानों और क़बीले का मेरे द्वारा भरण-पोषण हो रहा है। अत: वही जिसे दुनिया ने ठुकरा दिया, जिसको अपमानित तथा तिरस्कृत समझा गया आज उसकी आवाज़ पर लाखों व्यक्ति अपने प्राण त्यागने को तैयार हैं। आज दुनिया में कोई बड़े से बड़ा बादशाह भी ऐसा नहीं मिल सकता जिसके प्रति लोग इतना प्रेम तथा निष्ठा रखते हों और जिसके नाम पर वह लोग अपने प्राणों की आहुति के लिए तैयार हों। बेशक क़ौमे देशभक्ति के तहत आज भी बलिदान दे रही हैं मगर दुनिया के प्रदे पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसके नाम पर इतने मनुष्य अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार हों जितने मनुष्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम पर अपने प्राण त्यागने के लिए तैयार हैं यद्यपि यह वही व्यक्ति था जो एक तबेले में चालीस दिन तक चिल्लाकशी करता रहा और जिसे सिवाए कुछ लोगों के दुनिया में कोई व्यक्ति नहीं जानता था। फिर ख़ुदा ने उसे बढ़ाया और उसके नाम को दुनिया में फैलाया। जब दुनिया उसका इन्कार कर रही थी, जब दुनिया उसका विरोध कर रही थी, जब दुनिया उसको मिटाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा रही थी उस समय ख़ुदा ने उसे संबोधित किया और फ़रमाया :-

"दुनिया में एक नज़ीर (सचेत करने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया। लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली हमलों से उसकी सच्चाई को उजागर कर देगा।"

(तज़किरह पृष्ठ 104 चतुर्थ ऐडिशन)

अत: देखो! ख़ुदा ने शक्तिशाली हमलों द्वारा उसकी सच्चाई दुनिया में प्रकट की या नहीं? आज लाखों मनुष्य ऐसे हैं जो इस व्यक्ति पर ईमान रखते हैं केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं विदेशों में भी। आज पंजाब तथा हिन्दुस्तान में जमाअत को इतनी शक्ति प्राप्त है तथा इतने उत्तम रूप से संगठित है कि कोई दूसरी जमाअत अपनी शक्ति तथा अपने संगठन में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती और दुनिया में इसकी संख्या से सौ गुना

बड़ी भी कोई जमाअत ऐसी नहीं जो ऐसी क़ुर्बानियां दे रही हो यह जमाअत दुनिया के समक्ष प्रस्तुत कर रही है। अत: अल्लाह तआला ने इस भविष्यवाणी को इतने शक्तिशाली हमलों के साथ पूरा किया है कि मैं नहीं समझता कि दुनिया का कोई व्यक्ति ईमानदारी से सोचने के बाद यह कहे कि यह पेशगोई पूरी नहीं हुई। उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि यह ख़ुदा की पेशगोई है। उसी ख़ुदा की जो सर्वज्ञ है, जिसके वश (नियंत्रण) में पृथ्वी और आकाश का कण-कण है। अत: यह एक बहुत महान संकेत है जो ख़ुदा ने प्रकट किया। मैं इस संकेत को प्रस्तुत करते हुए यहां एकत्र हुए लोगों से कहता हूं कि क्या अभी भी यह समय नहीं है कि आप लोग ख़ुदा के इस संकेत पर विचार करें और इस से लाभ उठाएं? क्या अभी समय नहीं आया कि आप लोग ख़ुदा तआला के इन शक्तिशाली हमलों के देखने के बाद उसके मामूर (चयनित) को स्वीकार करें ताकि दुनिया में शांति तथा सद्भाव पैदा हो और शांति बनी रहे? याद रखो! जब तक ख़ुदे के भेजे हुए मामूर के मार्गदर्शन को दुनिया स्वीकार नहीं करती उस समय तक उसे कभी शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती चाहे वह कितना प्रयास करे और चाहे शान्ति की प्राप्ती के जितना भी संघर्ष कर ले। संसार के लिए शान्ति प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम है कि वह उस वृक्ष की छाया के नीचे आ जाएँ जो ख़ुदा ने लगाया है। जब तक वह इस वृक्ष की छाया के नीचे नहीं आते उस समय तक उसे कभी वास्तविक शांति तथा संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती।

मैंने बताया है कि यह भविष्यवाणी केवल एक भविष्यवाणी नहीं अपितु इसमें इतनी सारी ख़बरें हैं कि किसी मनुष्य में क्षमता नहीं थी कि वह ऐसी सूचनाएं दे सकता। विश्व में कौन कह सकता है कि मेरा एक पुत्र उत्पन्न होगा, वह 9 वर्ष की अवधि में पैदा होगा, वह जीवित रहेगा, वह पृथ्वी के किनारों तक प्रसिद्ध होगा, वह दया और अनुग्रह का प्रतीक होगा, क़ौमें उसके द्वारा आशीष पाएंगी, उससे असीरों का उद्धार (बंदी मुक्त होना) होगा और उसके द्वारा इस्लाम धर्म की महिमा प्रकट होगी। यह सभी तथ्य एक-एक कर कि इस बात का प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं कि यह भविष्यवाणी ख़ुदा की ओर से थी। फिर इतनी ही नहीं इस भविष्यवाणी में अल्लाह तआला की ओर से और भी बहुत सी बातें बताई गईं थीं अत: अल्लाह तआला की ओर से वह बातें जो इस भविष्यवाणी में बताई गई हैं वह यह हैं :-

प्रथम - यह बताया गया था कि वह लड़का जो ख़ुदा तआला की शक्ति का प्रतीक होगा जीवित रखा जाएगा ताकि उसके माध्यम से अल्लाह तआला की बात पूरी हो।

द्वितीय - वह दया का प्रतीक होगा। अर्थात उसके प्रकट होने से अहमदिय्यत का विकास होगा और इस्लाम के विरोधियों से मुक्ति प्राप्त होगी।

तृतीय - वह क़ुरबत (निकटता) का प्रतीक होगा। अर्थात् इस जमाअत में कुछ लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्तर को गिराने और जमाअत के टुकड़े करने के प्रयास करेंगे। वह उनके हमलों का बचाव करेगा और इस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सही स्थान और स्थिति लोगों पर प्रकट कर देगा।

चतुर्थ - वह अनुग्रह का प्रतीक होगा, अर्थात् सिलसिले का विकास उससे संबंधित होगा।

पंचम - वह उपकार का प्रतीक होगा। अर्थात् उसके द्वारा उद्देश्यों की पूर्ती होगी।

छठी - वह विजय की कुंजी होगा।

सातवीं - वह सफ़लता (उपलब्धि) की कुंजी होगा।

आठवीं - वह महिमा वाला होगा।

नोवीं - वह गौरवशाली होगा।

दसवीं - वह धन का स्वामी होगा।

ग्यारहवीं - वह अपने मसीही स्वरूप से लोगों के रोगों को ठीक करेगा।

बारहवीं - वह रूहुल हक़ (सच्ची भावना) की बरकत अपने साथ रखता होगा।

तेरहवीं - वह कलमतुल्लाह (ईश्वाणी, अल्लाह का वचन) होगा।

चौदहवीं - वह कलमा तमजीद (प्रशंसा सहित भेजा जाएगा) होगा।

पंद्रहवीं - बह बहुत बुद्धिमान होगा।

सोलहवीं - वह बहुत विद्वान (ज्ञानी) होगा।

सत्रहवीं - वह कोमल हृदय वाला होगा।

अठारहवीं - वह बाहरी ज्ञान (विद्याओं) से युक्त होगा।

उन्नीसवीं - वह छुपी हुई विद्याओं से युक्त होगा।

बीसवीं - वह तीन को चार करने वाला होगा।

इक्कीसवीं - दो शंबा (सोमवार) से उसका विशेष संबंध होगा।

बाईसवीं - फ़रज़न्दे दिलबन्द (पगड़ी वाला) होगा।

तेईसवीं - प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

चौबीसवीं - मज़हर प्रथम होगा।

पच्चीसवीं - मज़हर आख़िर होगा।

छब्बीसवीं - सच्चाई की अभिव्यक्ति वाला होगा।

सत्ताईसवीं - गरिमा की अभिव्यक्ति वाला होगा।

अठाईसवीं - वह ऐसा होगा जैसे ख़ुदा ने इस युग में आकाश से उतारा हो।

उनतीसवीं - उनका अवतरण अत्यंत शुभ होगा।

तीसवीं - उसका अवतरण दिव्य महिमा के प्रकटन का कारण होगा।

इक्कतीसवीं - वह प्रकाश होगा।

बत्तीसवीं - वह ख़ुदा की इच्छा के इत्र से अभिषेक किया जाएगा।

तेतीसवीं - ख़ुदा अपनी आत्मा उसमें डालेगा अर्थात् दिव्य वचन उस पर प्रकट होगा।

चौंतीसवीं - ख़ुदा की छाया उसके सिर पर होगी।

पैतींसवीं - वह जल्दी-जल्दी बढ़ेगा।

छत्तीसवीं - वह असीरों (बंदियों) की मुक्ति (उद्दार) का कारण होगा।

सैंतीसवीं - वह पृथ्वी के किनारों तक प्रसिद्धि पाएगा।

अड़तीसवीं - क़ौमें उसके द्वारा आशीष पाएंगी।

उनतालीसवीं - उसका नफ़्सी (आत्मिक) बिन्दु आकाश होगा।

चालीसवीं - वह देर से प्रकट होगा।

इक्तासीलवीं - वह दूर से आएगा।

ब्यालीसवीं - वह गौरव वाला रसूल (अवतार) होगा।

तैंतालीसवीं - उसकी प्रत्यक्ष बरकतें (आशीर्वाद) पूरी दुनिया में फैल जाएंगी।

चवालीसवीं - उसकी आन्तरिक बरकतें (आशीर्वाद) पूरी दुनिया में फैल जाएंगी।

पैंतालीसवीं - यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की भांति उसके भाई उसका विरोध करेंगे। जैसा कि मैंने बताया है कि क़ौम के लीडर मेरे विरुद्ध हो गए।

छियालीसवीं - उसकी कई शादियाँ होंगी। अत: इस समय तक मैं छ: विवाह कर चुका हूं दी पत्नियों की मृत्यु हो चुकी है और चार मौजूद हैं।

सैंतालीसवीं - वह आलिमे कबाब (विद्वान) होगा। अर्थात् उस समय में बड़े-बड़े युद्ध होंगे। अत: प्रथम विश्व युद्ध भी मेरी ख़िलाफ़त के समय में हुई और अब द्वितीय युद्ध भी मेरे समय में ही हो रहा है।

अड़तालीसवीं - वह बशीरुद्दोला होगा। अर्थात् जिस हुकूमत में वह होगा ख़ुदा उस हुकूमत के विजय की ख़बर उसे दे देगा।

उन्चासवीं - वह महमूद (श्रेष्ठ, शुभ) होगा।

पचासवीं - वह ज़क्की (पवित्र) होगा।

इकावन - वह दृढ़ निश्चय वाला (साहसी) होगा।

बावन- वह हज़रत उमर रजि. की तरह द्वितीय ख़लीफ़ा होगा।

तरेपन - वह सुंदरता में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उदाहरण होगा।

चौवन - वह दयालुता में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उदाहरण (भांति) होगा।

पचपन - वह कलिमतुल-अज़ीज़ होगा।

छप्पन - वह कलिमतुल्लाह ख़ान होगा।

सतावन - वह नासिरुद्दीन अर्थात धर्म की सेवा करने वाला होगा।

अठावन - वह फ़ातेहुद्दीन होगा।

यह वह अठावन नाम या भविष्यवाणियाँ हैं जिनका इल्हामात में उल्लेख आता है बाद में किसी पत्रिका में उन पर विस्तार से चर्चा की जाएगी कि इनमें से कितनी भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं और कितनी अभी पूरी होने वाली हैं लेकिन इन इल्हामात पर एक सरसरी सी दृष्टि डाल कर आप देख सकते हैं कि अल्लाह तआला के यह शब्द कितनी भव्यता (महिमा) के साथ पूरे हुए हैं।" (....शेष)

(दावा मुसलेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा पृष्ठ 21-37)

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सादा जीवन

(हज़रत खलीफ़ा सानी रज़िअल्लाहु अन्हु की क़लम से)

अनुवादक- नदिया परवेज़ा

सबसे अच्छा आदर्श

हमारे सुधारक और मार्गदर्शक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि रहमतुल्लिल आलमीन (सब दुनिया के लिए रहमत) हो कर आए थे और अल्लाह तआला ने आप को सब दुनिया के लिए अच्छा आदर्श बताया है इसलिए आपने हमारे लिए जो आचरण निर्धारित किए वही सबसे ठीक और उच्चतम हैं और इस योग्य हैं कि हम उसकी नकल करें। आपने अपने व्यवहार से हमें बताया है कि स्वयं की वह भावनाएं जो पवित्र और नेक हैं उनको दबाना तो किसी तरह उचित नहीं अपितु उनको तो उभारना चाहिए और जो भावनाएं ऐसी हों कि उनसे गुनाहों और बुराईयों की ओर ध्यान जाता हो उनको छुपाना नहीं बल्कि उनको मारना ज़रूरी है। अत: अगर बनावट के तौर पर कुछ ऐसी बातें नहीं करते जिनको करना हमारे दीन और दुनिया के लिए उपयोगी था तो हम ग़लती पर हैं और यदि वह बातें जिनको करना इस्लाम धर्म के अनुसार हमारे लिए उचित है केवल बनावट के तौर पर नहीं करते, बल्कि वास्तव में उनका शौक रखते हैं तो यह दोगलापन हैं और अगर लोगों की नज़रों में इज़्ज़त और महानता प्राप्त करने लिए स्वयं को खामोश और गंभीर बनाते हैं तो यह शिर्क है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में ऐसा एक भी आचरण नहीं पाया जाता जिससे पता लगे कि आपने इन तीनों उद्देश्यों में से किसी के लिए बनावट से काम लिया बल्कि आपकी ज़िन्दगी बहुत सादा और साफ मालमू होती है जिससे पता लगता है कि आप अपनी इज़्ज़त को लोगों की हाथों में नहीं समझते थे बल्कि आदर और अपमान का मालिक ख़ुदा को ही समझते थे।

धार्मिक पथ-प्रदर्शकों में बनावट

जो लोग धर्म के पथ-प्रदर्शक होते हैं उन्हें यह बहुत ध्यान होता है कि हमारी इबादतें और ध्यान दूसरें लोगों से ज़्यादा हों और खासतौर पर बनावट से काम लेते हैं ताकि लोग बहुत नेक समझे यदि मुसलमान हैं तो वज़ू में खास ख्याल करेंगे और बहुत देर तक वुज़ू के अगों को धोते रहेंगे और वुज़ू के कतरों से परहेज़ करेंगे। सज्दा और रुकू लम्बे-लम्बे करेंगे अपनी शक्ल से खास हालत रोने धोने की ज़ाहिर करेंगे और खूब वज़ीफे पड़ेंगे मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हालांकि सबसे मुत्तकी और परहेज़गार थे और आपके बराबर अल्लाह से डरने वाला कोई इन्सान पैदा नहीं कर सकता मगर बावजूद इसके आप इन सब बातों में सादा थे और आपका जीवन बिल्कुल बनावट से पाक था।

बच्चे के रोने पर नमाज़ में जल्दी

अबी क़तादा से वर्णन है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया :

اِنِّی لَاَقُوْمُ فِی الصَّلٰوۃِ اُرِیْدُ اَنْ اُطَوِّلَ فِیْھَا فَاَسْمَعُ بُکَاءَ الصَّبِیِّ فَاَتَجَوَّزُ فِیْ صَلٰوتِیْ کَرَاھِیَۃَ اَنْ اَشُقَّ عَلٰی اُمِّہٖ (بخاری کتاب الاذان)

अर्थात् मैं कभी नमाज़ में खड़ा होता हूं और इरादा करता हूं कि नमाज़ को लम्बा करुं लेकिन किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुन लेता हूं तो अपनी नमाज़ को इस डर से कि कहीं मैं बच्चे की माँ को तंगी में ना डालू नमाज़ हल्की कर देता हूं किस सादगी से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि हम बच्चे की आवाज़ सुनकर नमाज़ में जल्दी कर देते हैं आजकल के सूफी तो ऐसी बात को शायद अपना निरादर समझे क्योंकि वो तो इस बात को ज़ाहिर करने में अपना गर्व समझते हैं कि हम नमाज़ में ऐसे मस्त हुए कि कुछ खबर ही नहीं रही और चाहे पास ढोल भी बजते रहें तो हमें कुछ ध्यान नहीं आता मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन बनावटों से अलग थे आपकी महानता ख़ुदा तआला की दी हुई थी ना कि इन्सानों ने आपको सम्मान बख्शा था यह ख्याल वही कर सकते हैं जो इन्सानों को अपनी इज़्ज़त देने वाला समझते हैं

जूतियों के साथ नमाज़ पढ़ना

हज़रत अनस से वर्णन है

اَنَّهُ سُئِلَ اَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ فِيْ نَعْلَيْهِ قَالَ نَعَمْ (بخاری)

अर्थात् आप से पूछा गया कि क्या नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जूतों के साथ नमाज़ पढ़ लिया करते थे आपने उत्तर दिया कि हाँ पढ़ लेते थे इस उदाहरण से ज्ञात होता है कि आप किस तरह बनावटी बातों से बचते थे। अब वो ज़माना आ गया है कि वो मुसलमान जो ईमान और इस्लाम से भी अन्जान हैं यदि किसी को अपनी जूतियों समेत नमाज़ पढ़ते देख लें तो शोर मचा दें और जब तक कोई उनके ख्याल के मुताबिक सब शर्तों को पूरा ना करे वो देख भी नहीं सकते परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो हमारे लिए सर्वोत्तम आदर्श हैं आपका यह तरीका था बल्कि आप हालात को देखते थे ना कि बनावट के पाबन्द थे। अल्लाह तआला की इबादत के लिए पवित्रता एक शर्त है और यह बात क़ुर्आन करीम और हदीसों से साबित है इसलिए जो जूती पवित्र हो और आम जगहों पर जहां गन्दगी लगने का खतरा हो पहनकर ना गए हों तो उसमें ज़रुरत के समय नमाज़ पढ़ने में कुछ आपत्ति नहीं और आपने ऐसा करके उम्मते मुहम्मदिया पर एक बहुत बड़ा उपकार किया कि उन्हें आइन्दा के लिए बनावट से बचा लिया। इस अच्छे नमूने से उन लोगों को फायदा उठाना चाहिए जो आजकल इन बातों पर झगड़ते हैं और बनावट के पीछे चलते हैं जिस काम से अल्लाह की महानता और तक़्वा में फर्क ना आए उसके करने पर इन्सान की बुज़ुर्गी में फरक नहीं आ सकता।

बिन बुलाए दावत में आने वाले के लिए इजाज़त माँगना

हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ि अल्लाह अन्हु से वर्णित है कि

قَالَ كَانَ مِنَ الْاَنْصَارِ رَجُلٌ لَهُ اَبُوْ شُعَيْبٍ وَ كَانَ لَهُ غُلَامٌ لَحَّامٌ فَقَالَ اصْنَعْ لِيْ طَعَامًا اَدْعُوْ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَامِسَ خَمْسَةٍ فَدَعَا رَسُوْلُ اللهِ صلَّى الله عليه وسلم خَامِسَ خَمْسَةٍ فَتَبِعَهُمْ رَجُلٌ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم اِنَّكَ دَعَوْتَنَا خَامِسَ خَمْسَةٍ وَهَذَا رَجُلٌ قَدْ تَبِعَنَا فَاِنْ شِئْتَ اَذِنْتَ لَهُ وَاِنْ شِئْتَ تَرَكته قَالَ بَلْ اَذِنْتُ لَهُ (بخاری كتاب الاطعمة)

आपने फ़र्माया कि एक व्यक्ति अन्सार में से था उसका नाम अबू शोऐब था और उसका एक सेवक था जो कसाई था उसे उसने हुक्म दिया कि तू मेरे लिए खाना तैयार कर कि मैं रसुलूल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चार और आदमियों के साथ खाने के लिए बुलाऊंगा फिर उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी कहला भेजा कि हुज़ूर की ओर चार ओर आदमियों की दावत है जब आप उसके घर चले तो एक ओर व्यक्ति भी साथ हो गया जब आप उसके घर पर पहुँचे तो आपने कहे कि तुम ने हमें पाँच आदमियों को बुलाया था और यह भी हमारे साथ आ गया है अब बताओ इसे भी अन्दर आने की अनुमति है या नहीं। उसने कहा या रसूलुल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमअनुमति है तो आप उसे समेत अन्दर चले गए।

इस हदीस से ज्ञात होता है कि आप किस तरह सादगी से मामलों को पेश कर देते थे शायद आपकी जगह कोई ओर होता तो चुप ही रहता मगर आप दुनिया के लिए आदर्श थे इसलिए आप हर बात को जब स्वयं करके ना दिखाते हमारे लिए मुश्किल होती आपने अपने अमल से बता दिया कि सादगी ही इन्सान के लिए मुबारक है और ज़ाहिर कर दिया कि आपकी इज़्ज़त बनावट या दिखावारहित है और ना आप ज़ाहिरी खामोशी या ग़ौरव से बड़ा बनना चाहते थे बल्कि आपकी इज्ज़त अल्लाह तआला की तरफ से थी।

घर के खर्चे में सादगी

आपका जीवन बहुत सादा था और वो फिज़ूलखर्ची जो अमीर लोग अपने घर के खर्चों में करते हैं आपमें नाम को नहीं थी बल्कि ऐसी सादगी से जीवन व्यतीत करते थे कि दुनिया के बादशाह उसे देखकर ही हैरान हो जाए और उस पर अमल करना तो अलग रहा यूरोप के बादशाह शायद यह भी ना मान सके कि कोई ऐसा बादशाह भी था जिसे दीन की बादशाहत भी हासिल थी और दुनिया की हुकूमत भी हासिल थी मगर फिर भी वो अपने खर्चों में ऐसा मितव्ययी और सरल था और फिर कंजूस नहीं बल्कि दुनिया ने आज तक जिस क़दर सखी पैदा किए हैं उन सबसे बढ़कर सखी था।

अमीरों की हालत

जिन को अल्लाह तआला माल व दौलत देता है उनका हाल लोगों से छुपा नहीं ग़रीब से गरीब देशों में भी आमतौर पर अमीरों का गिरोह मौजूद है यहां तक कि जंगली क़ौमों और कबीलों में भी कोई ना कोई वर्ग अमीरों का होत है और उनके जीवन में और दूसरें लोगो के जीवन में जो अंतर होता है वो किसी से छुपा नहीं विशेषकर जिन क़ौमों में सभ्यता भी हो उनमें तो अमीरों के जीवन ऐसे विलासी होते हैं कि उनके खर्चे अपनी सीमाओं से भी आगे निकल जाते हैं।

अरब सरदारों की हालत

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस क़ौम में पैदा हुए वो भी घमण्ड और अहंकार में विशेषतौर पर प्रसिद्ध थी और सेवकों को अपना सरमाया जानती थी अरब सरदार बावजूद एक ग़ैर आबाद देश के नागरिक होने के बीसियों सेवक रखते और अपने घरों की रौनक को बढ़ाने के आदी थे।

अरब के दो पड़ोसी क़ौमों के बादशाहों की हालत

अरब के इर्द-गिर्द दो क़ौमें ऐसी बस्ती थी कि जो अपनी शक्ति और ताकत के ऐतबार से उस समय की जानी जानेवाली सारी दुनिया पर प्रबल थी एक ओर ईरान अपनी पूर्वी वैभव के साथ अपने शाही रोब को पूरे एशिया पर स्थापित किए हुए था तो दूसरी ओर रोम अपनी पश्चिमी वैभव अफ्रीका और यूरोप पर अपना प्रभुत्व फैलाए हुए था और यह दोनों देश विलासिता में अपने राज्यों को कहीं पीछे छोड़ चुके थे और एशों आराम के ऐसे ऐसे सामान पैदा हो चुके थे कि कुछ बातों को तो अब इस युग में भी कि ऐशों आराम के सामानों की तरक्की बहुत आगे बढ़ चुकी है आश्चर्य की नज़र से देखा जाता है ईरान के दरबार में ईरान के राजा जिस शान और वैभव के साथ बैठने के आदी थे और उनके घरों में जो कुछ सुख के सामान जमा किए जाते थे उसे शाहनामा के पढ़ने वाले अच्छी तरह समझ सकते हैं और जिन्होंने इतिहास में उन सामानों के विस्तार का अध्ययन किया है वो तो अच्छी तरहसे उनका अन्दाज़ा कर सकते हैं इससे बढ़कर और क्या होगा कि शाही दरबार के कालीन में भी जवाहीर और मोटी टंगे हुए थे और बाग़ों के नक्शे को ज़मरदों र मोतियों के खर्चे से तार करके दरबार के मैदान को शाही बाग़ों जैसा बना दिया जाता था हज़ारों सेवक और दास ईरान के राजा के साथ रहते और हर समय सुख और ऐश का बाज़ार गर्म रहता था रूमी बादशाह भी ईरानियों से कम ना थे और वो यद्यपि एशियाई वैभव और शान के के शौकीन ना थे तो भी पश्चिमी सुख और खूबसूरती के शौकीन ज़रूर थे। जिन लोगों ने रुमियों का इतिहास पढ़ा है वो जानते हैं कि रुमियों की हुकूमतों ने अपने राज्य के दिनों में दौलत को किस किस ढंग पर खर्च किया है।

बस अरब जैसे देश में पैदा होकर जहां दूसरों को दास बनाकर हुकूमत करना गर्व समझा जाता था और जो रोम और ईरान जैसी शक्तिशाली राजयों के मध्य था कि एक ओर ईरानी सुख और वैभव उसे लुभा रहा था तो दूसरी ओर रुमी ढंग की खूबसूरती और वैभव के सामान उसका दिल अपनी ओर खींच रहे थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अरब का बादशाह बन जाना और फिर इन बातों में से एक का भी असर ना लेना और रोम और ईरान के जाल से साफ बच जाना और अरब के बुत को मारकर गिरा देना क्या यह की ऐसी बात है जिसे देखकर फिर भी कोई अकलमन्द इन्सान आपके पवित्र लोगों के सरदार होने और स्वयं को पवित्रता का सम्पूर्ण आदर्श होने में शक कर सके नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

घर का काम स्वयं करना

इसके अतिरिक्त आपके इर्द-गिर्दबादशाहों के जीवन के नमूने थे वो ऐसे ना थे कि उनसे आप प्रभावित ना होते और जो आपके कर्मों में ज़ाहिर ना होते यह बातच भी ध्यानपूर्वक है कि आपको अल्लाह तआला ने ऐसा दर्जा दिया था कि अब आप समस्त लोगों की सोचों का केन्द्र हो गए थे और एक ओर रोम आपकी बढ़ती हुई ताकत को और दूसरी ओर ईरान आपकी उन्नति करने वाले वैभव को सन्देह की नज़रों से देख रहा था और दोनों गंभीरता से सोच रहे थे कि इस सैलाव को रोकने के लिए क्या उपाय किया

जाए इसलिए दोनों राज्यों के आदमी आपके पास आते-जाते थे और उनके साथ पत्रलेखन का सिलसिला आरंभ था ऐसी स्थिति में उन लोगों पर अपना दबदबा स्थापित करने के लिए ज़रूरी था कि आप भी अपने साथ एक जमाअत ग़ुलामों की रखते और अपनी हालत ऐसी बनाते जिससे वो लोग प्रभावित होते और और रोब में आ जाते किन्तु आपने कभी ऐसा ना किया। दासों की जमाअत तो अलग रही घर के काम के लिए भी कोई नौकर ना रखा। और स्वयं ही सब काम कर लेते थे।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहा अन्हा के बारे में लिखा है कि

اَنَّهَا سُئِلَتْ عَنِ الَّبِي صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ و اٰلِه وَسَلَّمَ مَا كَانَ يَصْنَعُ فِيْ بَيْتِه قَالَتْ كَانَ يَكُوْنُ فِيْ مِهْنَةِ اَهْلِه تَعْنِيْ فِيْ خِدْمَةِ اَهْلِه فَاِذَا حَضَرَتِ الصَّلٰوةُ خَرَجَ اِلَى الصَّلٰوةِ (بخاری کتاب الاذان)

अर्थात् हज़रत आइशा रज़ियल्लाह अन्हा से पूछा गया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में क्या करते थे आपने उत्तर दिया कि आप अपने घर वालों की मेहनत करते थे अर्थात् सेवा करते थे। बस जब नमाज़ का समय आ जाता तो आप नमाज़ के लिए बाहर चले जाते थे।

इस हदीस से पता लगता है कि आप किस सरलता से जीवन व्यतीत करते थे और राजत्व के बावजूद आपके घर का कामकाज करने वाला कोई नौकतर ना होता बल्कि आप अपने खाली समय में स्वयं ही अपनी पत्नियों के साथ मिलकर घर का काम करवा देते। अल्लाह अल्लाह कैसा सादा जीवन है, क्या अद्भुत आदर्श है क्या कोई इन्सान भी ऐसा पेश किया जा सकता है जिस ने राजा होकर यह आदर्श दिखाया हो कि अपने घर के काम के लिए एक नौकर भी ना हो। अगर किसी ने दिखाया है तो वो भी आपके खुद्दाम में से होगा। किसी दूसरे बादशाह ने जो आपकी ग़ुलामी का ग़ौरव ना रखता हो ऐसा आदर्श कभी नहीं दिखाया। ऐसे भी मिल जाएंगे जिन्होंने दुनिया से डरकर उसे छोड़ ही दिया। ऐसे भी होंगे जो दुनिया में पड़े और उसी के होकर रह गए। किन्तु यह आदर्श कि दुनिया के सुधार के लिए उसका बोझ अपने कन्धों पर भी उठाए रखा और देशों की भागदौड़ अपने हाथ में रखी मगर फिर भी उससे अलग रहे। और उससे मोहब्बत ना की और बादशाह होकर गरीबी को चुन लिया। यह बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सेवकों के अतिरिक्त किसी में नहीं पाई जाती। जिन लोगों के पास कुछ था ही नहीं वो अपने रहने के लिए मकान भी ना पाते ते और शत्रु जिन्हें कहीं चैन से नहीं रहने देते ते कभी कहीं और कभी कहीं जाना पड़ता था उनके सादा जीवन का कोई उच्च आदर्श नहीं। जिस के पास हो ही नहीं उस ने वैभव और शान से क्या रहना है। किन्तु अरब देश का बादशाह होकर लाखों रुपया अपने हाथ लोगों में बांट देना और घर का काम भी स्वयं करना यह बात है जो गहरी नज़री रखने वालों के लिए ध्यान को अपनी ओर खींचे बिना नहीं रह सकती।

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सादा जीवन उर्दू पृष्ठ 2-8)

☆ ☆ ☆

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT
Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS

All India Truck Supplier

Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لیے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also

Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

सुनहरा मौक़ा

दाखला दारुल सनाअत क़ादियान, सत्र 2025-26

Ahmadiyya Vocational Training Centre

(अहमदिया व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र)

अल्लाह के फ़ज़ल से बेरोजगार अहमदी नौजवानों के लिए दारुल सनाअत, क़ादियान (व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र) में हुनर सीखने का बहतरीन मौक़ा है जहां से हर साल कई नौजवान काम सीख कर अपने रोजगार से लग जाते हैं। यहाँ पर सिखाए जाने वाले कॉर्सेस के लिए सरकार से मान्यता प्राप्त सर्टिफिकेट भी दिया जाता है। और मात्र एक साल के अंदर अंदर पूरा कोर्स करवा दिया जाता है।

क़ादियान के बाहर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल तथा Mess का प्रबंध भी मौजूद है रिहाइश और खाने की कोई फीस नहीं है केवल कोर्स की बोर्ड फीस है जो आसान किस्तों में ली जाती है। तो ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूरी नहीं कर सके या आठवीं और दसवीं के बाद टेक्निकल कोर्स करने के इच्छुक हों दाखिले के लिए जल्दी संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी तालीम का भी इंतज़ाम मौजूद है इसके अलावा रोजाना इंग्लिश स्पीकिंग और पर्सनेलिटी डेवलपमेंट की क्लास भी ली जाती है।

नए सत्र जुलाई 2025-26 के लिए एडमिशन आरंभ हो गए हैं जिसकी क्लासस 16 जुलाई 2025 से शुरू हो जाएंगी। जो नौजवान कोई हुनर सीख कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हैं उनके लिए यह बहुत ही सुनहरा अवसर है।

Course	fees	Duration
Certificate in computer applications	9000	1 year
Plumbing-	6000	1 year
Electrician-	6000	1 year
Welding-	6000	1 year
Diesel mechanic	10000	1 year
motor vehicle mechanic	7000	1 year
Ac & refrigerator	9000	1 year

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- darulsanaat.qadian@gmail.com

फोन - 98727 25895, 8604024043

प्रिंसिपल, दारुल सनाअत क़ादियान